आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-27, अंक-8 अगस्त 2013

इस अंक में

- स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग : जन स्वास्थ्य के हित में निरंतर कार्यरत 69
- आई सी एम आर मुख्यालय के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन 73
- स्मृति शेषः डॉ शरद विश्वनाथ आप्टे (1930-2013) 74
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 74
- आई सी एम आर की वित्तीय सहायता से संपन्न संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 75

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग : जन स्वास्थ्य के हित में निरंतर कार्यरत

डॉ विश्व मोहन कटोच

भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत वर्ष 2007 में स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग यानि डी एच आर की स्थापना की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य भारत में मौलिक, व्यावहारिक और चिकित्सीय अनुसंधान के लिए मानव संसाधनों के संवर्धन, इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास तथा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आवश्यक अन्य कदमों के माध्यम से मेडिकल शोध को बढ़ावा देना है। स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (जो डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ रिसर्च यानि डी एच आर के नाम से जाना जाता है) के अंतर्गत भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के अलावा 9 नये कार्यों के निष्पादन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इन नवीन कार्यों में स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर और मानव संसाधन को मजबूत बनाने; शोध गवर्नेंस; महामारियों/प्रकोपों का निवारण एवं प्रबंधन; तथा शोध परिणामों को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए विभिन्न एजेंसियों के बीच परस्पर समन्वयन स्थापित करने जैसे लक्ष्य प्रमुख हैं। आई सी एम आर के कार्यों में नवीन ज्ञान का सृजन और कम लागत वाली प्रौद्योगिकी का विकास करना प्रमुख हैं, और यह इस नव निर्मित स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के आधार के रूप में कार्यरत है।

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग का उद्देश्य नैदानिकी, चिकित्सा विधियों के साथ–साथ वैक्सीनों के संबंध में नवीन शोधों को प्रोत्साहित करके आधुनिक स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी को देश के आम आदमी तक पहुंचाना; स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अन्य विभागों के साथ–साथ अन्य वैज्ञानिक विभागों के सहयोग में शोध परिणामों के परीक्षण/मूल्यांकन के उपरांत उनको उत्पादों में परिवर्तित करना तथा इन नवीन उत्पादों को स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान के माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा में सम्मिलित करना है।

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के अंतर्गत अनुसंधान कार्य देश भर में स्थित आई सी एम आर के 32 शोध संस्थानों के नेटवर्क के माध्यम से एवं आई सी एम आर की एक्स्ट्राम्युरल रिसर्च एवं इस विभाग की नवीन योजनाओं द्वारा किए जा रहे हैं।

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की नवीन योजनाएं

बारहवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग ने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित योजनायें तैयार की हैं:

1. शासकीय मेडिकल कॉलेजों में बहुविषयक अनुसंधान इकाइयों की स्थापना।
2. राज्यों में मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान यूनिट्स की स्थापना।
3. महामारियों और प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन हेतु शोध प्रयोगशालाओं के नेटवर्क की स्थापना।
4. स्वास्थ्य अनुसंधान हेतु मानव संसाधन विकास।
5. शोध गवर्नेंस पर अंतर्क्षेत्रीय अभिसरण एवं प्रोत्साहन तथा दिशा निर्देश देने हेतु ग्रांट-इन-एड योजना।
6. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर)।

इंफ्रास्ट्रक्चर संबंधी विकास की स्थापना पर इस विभाग (डी एच आर) की तीन योजनाओं को भारत सरकार द्वारा मंजूरी प्राप्त हो गई है जो निम्न हैं:

1. शासकीय मेडिकल कॉलेजों में बहुविषयक अनुसंधान इकाइयों की स्थापना

विश्व भर में स्वास्थ्य अनुसंधान मुख्यतया मेडिकल कॉलेजों/संस्थानों में किए जाते हैं। भारत में रोगियों को रोग विशिष्ट सेवाएं प्रदान करने और शिक्षण दोनों के लिए मेडिकल कॉलेज रीढ़ की हड्डी के समान हैं। इस समय, उच्च गुणवत्ता के शोधकार्य देश के कुछ चुनिंदा संस्थानों और मेडिकल कॉलेजों तक ही सीमित हैं और वह भी केवल कुछ राज्यों में। इसलिए, देश में उच्च दर्जे के स्वास्थ्य अनुसंधान को बढ़ावा देने और उसे प्रोत्साहित करने के साथ–साथ मेडिकल कॉलेजों को उपयुक्त शोध सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की तत्काल आवश्यकता है। स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा राज्यों के शासकीय मेडिकल कॉलेजों/संस्थानों में 80 बहुविषयक अनुसंधान यूनिट्स (मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट्स, एम आर यू) स्थापित करने का प्रस्ताव है जिनमें 35 एम आर यू वर्ष 2013–14 और शेष 45 यूनिट्स वर्ष 2014–15 के दौरान स्थापित की जाएंगी। इन यूनिट्स का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य अनुसंधान में इंफ्रास्ट्रक्चर का सृजन करना एवं उसे सुदृढ़ बनाना है।

2. राज्यों में मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान यूनिट्स (मॉडेल रूरल हेल्थ रिसर्च यूनिट्स) की स्थापना

यह देखा गया है कि केंद्र और कुछ राज्य सरकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई आधुनिकतम सुविधाओं तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पी एच सी)/सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सी एच सी) एवं तृतीयक सुरक्षा अस्पतालों के बीच एक विशाल अंतराल है। चिकित्सकों और नीति निर्माताओं का मानना है कि देश के दूर दराज स्तर पर विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों में रोग निदान एवं चिकित्सा प्रबंध की आधुनिक विधियां प्रयोग में नहीं लाई जा सकतीं। इस अंतराल को दूर करने के लिए स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग ने आगरा स्थित राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान के अंतर्गत घाटमपुर में इस प्रकार की एक यूनिट की स्थापना से प्राप्त अनुभवों एवं अत्यंत उपयोगी परिणामों के आधार पर मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान यूनिट्स स्थापित करने का प्रस्ताव रखा गया है। घाटमपुर मॉडेल से प्रदर्शित किया गया है कि रोग निदान की नई विधियां एवं चिकित्सा के साथ–साथ आधुनिक जानपदिक रोगविज्ञान (इपीडेमिओलॉजिकल) विधियां ग्रामीण आंचल में प्रयोग की जा सकती हैं। ये इकाइयां नवीन प्रौद्योगिकियों के विकास से जुड़े शोधकर्ताओं और राज्यों अथवा केंद्र; स्वास्थ्य प्रणाली के संचालकों (केंद्र/राज्य की स्वास्थ्य सेवाओं) और समुदाय के लोगों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करेंगी। इन इकाइयों का मुख्य उद्देश्य शोध परिणामों और नवीनतम प्रौद्योगिकियों को ग्रामीण स्तर तक पहुंचाना है जिससे सामुदायिक स्तर पर विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों में जन साधारण को बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध कराई जा सकें। इस विभाग को देश के राज्यों में मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान यूनिट्स (मॉडेल रूरल हेल्थ रिसर्च यूनिट्स, एम आर एच आर यू) स्थापित करने की मंजूरी प्राप्त हो गई है। कुल 15 मॉडेल रूरल हेल्थ रिसर्च यूनिट्स स्थापित की जानी हैं जिनमें 7 यूनिट्स वर्ष 2013–14 के दौरान तथा शेष 8 यूनिट्स वर्ष 2014–15 के दौरान स्थापित की जायेंगी।

3. महामारियों और प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन हेतु शोध प्रयोगशालाओं के नेटवर्क की स्थापना

भारत में विभिन्न संक्रामक रोगजनों के कारण प्रकोपों/महामारियों की घटनायें निरंतर होती हैं। इस समय देश में दो प्रमुख संस्थान इन स्थितियों का सामना करने एवं आवश्यक अनुसंधान कार्य करने से जुड़े हुए हैं, ये संस्थान हैं – राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (नेशनल सेंटर फॉर डिसीज़ कंट्रोल, एन सी डी सी), नई दिल्ली तथा आई सी एम आर का पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी, एन आई वी)। परंतु प्रकोपों/महामारियों की स्थितियों में इन संस्थानों के नियमित कार्य अत्यंत प्रभावित होते हैं। इस कारण इन प्रकोपों से संबंधित रोगजन की पहचान, रोग के निदान, तथा अधूरे एवं अपर्याप्त आंकड़ों की उपलब्धता जैसी स्थितियां इंटरवेंशन कार्यों को बहुत ही प्रभावित करती हैं। इसलिए देश में विषाणुज रोगों से निपटने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर एवं क्षमता को मजबूत बनाने की तत्काल आवश्यकता है, जिससे विषाणुज रोग के प्रकोपों की समय पूर्व पहचान की जा सके, पूर्वानुमान के लिए साधन विकसित किए जा सकें, मौजूदा के साथ–साथ नवीन विषाणुज उपभेदों की निरंतर निगरानी रखी जा सके, जैवआतंकवाद के कारकों के रूप में प्रयोग की संभाव्यता वाले विषाणुओं का समुचित रख–रखाव किया जा सके। इस उद्देश्य से स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग ने संक्रामक रोगों पर प्रयोगशालाओं पर एक तीन स्तरीय नेटवर्क स्थापित करने की योजना तैयार की है, जो एन आई वी, पुणे और एन सी डी सी, नई दिल्ली जैसे शीर्ष संस्थानों के पूर्ण मार्गदर्शन में कार्य करेगा।

उपर्युक्त तीनों योजनाओं को भारत सरकार से आवश्यक मंजूरी प्राप्त हो गई है और इनकी शुरुआत के उपयुक्त कदम उठाए जा रहे हैं।

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डी एच आर) द्वारा शासकीय मेडिकल कॉलेजों और क्षेत्रीय संस्थानों/प्रयोगशालाओं में प्रकोपों की प्रारम्भिक जांच/अध्ययनों हेतु क्षमता निर्माण के उद्देश्य से प्रयोगशालायें स्थापित की जा रही हैं। इस प्रयोजना के शुरू होने से पूर्व आई सी एम आर के द्वारा एड हॉक प्रोजेक्ट के तौर पर अभी तक 14 राज्यों में कुल 15 प्रयोगशालायें स्थापित की जा चुकी हैं जिसने कार्य करना शुरू कर दिया है। ये प्रयोगशालायें विषाणुज संक्रमणों के लिए दैनिक नैदानिक सेवाएं प्रदान करने के साथ इन रोगों के फैलाव व नई विधियों पर शोध कर रही हैं।

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा उपर्युक्त योजनाओं के अलावा निम्न योजनाओं का भी संचालन प्रस्तावित है जिनकी भारत सरकार से आवश्यक मंजूरी के पश्चात शुरुआत की जाएंगी:

स्वास्थ्य अनुसंधान हेतु मानव संसाधन विकास

इस विभाग द्वारा मेडिकल कॉलेजों और अन्य संस्थानों से सभी श्रेणियों के मेडिकल/बायोमेडिकल वैज्ञानिकों के लिए भारत में और भारत से बाहर प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन द्वारा देश के मानव संसाधन आधार को मजबूत बनाने की विभिन्न नीतियां अपनाई जायेंगी। इसके लिए भारतीय और विदेशी संस्थानों में लघुकालिक एवं दीर्घकालिक फेलोशिप्स प्रदान की जायेंगी। जिसके परिणामस्वरूप

विशिष्ट क्षेत्रों में स्वास्थ्य अनुसंधान हेतु प्रशिक्षित एवं दक्ष मानव संसाधन का एक कैडर विकसित किया जा सके।

शोध गवर्नेंस पर अंतर्क्षेत्रीय अभिसरण एवं प्रोत्साहन तथा दिशा निर्देश देने हेतु ग्रांट-इन-एड योजना

यह योजना स्वास्थ्य के क्षेत्र में उपयुक्त प्रौद्योगिकियों/नवाचारों के विकास को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न विभागों के समन्वित प्रयासों के द्वारा विधियों एवं तकनीकी के त्वरित विकास हेतु तैयार की गई है। जिससे शोध कार्य समाज के हित में उत्पादों/विधियों के विकास की दिशा में केंद्रित हों और जनता तक जल्दी पहुंच सके।

बी एस एल-4 सुविधा– स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि

आई सी एम आर के पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान (एन आई वी) द्वारा विषाणुओं सहित संक्रामक रोगों के शोध और प्रबंधन पर कार्य जारी हैं। इस संस्थान द्वारा मच्छरों, टिक्स और माइट्स जैसे रोगवाहकों (वेक्टर्स) द्वारा संचारित विषाणुओं पर उत्कृष्ट शोधकार्य किए जा रहे हैं। इस संस्थान ने हाल के वर्षों में यकृतशोथ और तीव्र मस्तिष्कशोथ संलक्षण (ए ई एस) के लिए जिम्मेदार कई अन्य विषाणुओं पर शोध कार्यों के माध्यम से अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की है। एन आई वी ने विभिन्न प्रकोपों और विभिन्न विषाणुज रोगों विशेषतया एच1 एन1 (H1N1) विश्वमारी के दौरान राज्य एवं केंद्र सरकार की एजेंसियों को तकनीकी और नैदानिक सहायता प्रदान की है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले रोगों जैसे कि इंफ्लुएंजा A (एच1 एन1) के अलावा SARS और एवियन इंफ्लुएंजा पर अध्ययन में इस संस्थान की अग्रणी भूमिका रही है।

इस संस्थान में अत्यंत रोगजनक विषाणुओं के रख–रखाव के लिए वर्ष 2000–2004 के बीच हाई कंटेनमेंट प्रयोगशाला/सुविधा (BSL-3 और सहायक BSL-2 प्रयोगशालायें) विकसित की गई जिसे फरवरी, 2005 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति सम्माननीय डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने राष्ट्र को समर्पित किया था। इस सुविधा के विस्तार में इसे BSL-4 प्रयोगशाला के रूप में विकसित करने की योजना तैयार की गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन, जेनेवा और सी डी सी, अटलांटा के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य दिशानिर्देशों के आधार पर वर्ष 2007 में इसे बायोसेफ्टी लेवेल–4 (BSL-4) के रूप में अपग्रेड करने की शुरुआत की गई। इस सुविधा के विकास के लिए आवश्यक वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग आई सी एम आर के साथ–साथ विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (डी एस टी) से भी प्राप्त हुआ और इस सुविधा का कार्य मार्च, 2012 में पूर्ण कर लिया गया। जून, 2012 में एम सी सी, पुणे में आयोजित अंतिम समीक्षा बैठक में BSL-4 फैसिलिटी पूर्णतया उपयुक्त पाई गई। दिनांक 28 दिसम्बर, 2012 को आयोजित एक भव्य समारोह में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री गुलाम नबी आजाद ने इस आधुनिकतम BSL-4 प्रयोगशाला का उद्घाटन करते हुए इसे राष्ट्र को समर्पित किया। यह पूर्ण एशिया क्षेत्र में इस प्रकार की एक मात्र सुविधा है और इससे भारत विश्व के कुछ चुनिंदा विकसित देशों की श्रेणी में आ गया है, जो न केवल स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय बल्कि सम्पूर्ण भारत देश के लिए गौरवपूर्ण एक विश्व स्तरीय उपलब्धि है। BSL-4 इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से न केवल भारत बल्कि इस क्षेत्र के अन्य देशों को पर्याप्त सहायता मिलेगी।

जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान फोरम

देश के विभिन्न भागों में जनजातीय लोगों के स्वास्थ्य की मौजूदा स्थिति को ध्यान में रखते हुए आई सी एम आर ने इन लोगों में रोगभार को कम करने की दिशा में एक समग्र प्रयास अपनाया है। आई सी एम आर के कुल 32 संस्थानों में 16 संस्थान जनजातीय समुदायों की पोषणज स्थिति, उनमें व्याप्त रोगवाहकजन्य और जलजन्य रोगों की उपस्थिति, उनके द्वारा इलाज हेतु प्रयुक्त पारम्परिक औषधियों की प्रायोगिक वैधता पर शोध कार्य करने के साथ–साथ उनमें अतिरक्तदाब, हीमोग्लोबिनविकृतियों, आदि जैसी स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करने से सम्बद्ध हैं। इन क्षेत्रों में शोध कार्य का उद्देश्य जनजातीय समुदाय के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की दिशा में इंटरवेंशन कार्यक्रमों की प्रभावकारिता को बेहतर बनाना है।

जनजातीय स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनुसंधानरत आई सी एम आर के कुछ प्रमुख संस्थान

1. क्षेत्रीय जनजातीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र, जबलपुर

इस केंद्र द्वारा प्रदाय महत्वपूर्ण सेवाएं निम्न हैं:

- मध्य भारत में हीमोग्लोबिनविकृतियों की जांच के अंतर्गत सिकिल सेल रोग की जांच;
- छत्तीसगढ़ में प्रमस्तिष्क मलेरिया और गंभीर मलेरिया की व्यापकता पर अध्ययन;
- मध्य भारत में *पी.फाल्सीपैरम* परजीवी से उत्पन्न मलेरिया की गम्भीरता के लिए बायोमार्कर्स का मूल्यांकन;
- मध्य प्रदेश के जनजातीय जिला बालाघाट में मलेरिया नियंत्रण के सघन उपायों का मूल्यांकन;
- जनजातीय जिला डिण्डोरी में मलेरिया व्यापकता पर सघन इंटरवेंशन उपायों की प्रभावकारिता का निर्धारण;
- मध्य प्रदेश में मलेरिया वेक्टर्स की सहोदर जातियों की मैपिंग;
- मध्य भारत में मलेरिया की महामारी का अध्ययन;
- मध्य प्रदेश की आदिम जनजातियों और जनजातियों की पोषणज स्थिति, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा की आदिम जनजातियों में विषाणुज यकृतशोथ की व्यापकता का अध्ययन;
- मध्य प्रदेश में फेफड़े के क्षयरोग, फाइलेरिया रोग, फ्लोरोसिस की व्यापकता का सर्वेक्षण;
- डिण्डोरी जिले के बैगाचक क्षेत्र में मलेरिया के विषय में जागरूकता बढ़ाने हेतु सूचना, शिक्षा एवं संचार माध्यम से जनजातियों को जागरूक बनाना।

2. क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र, पोर्ट ब्लेयर

- असंचारी रोगों के खतरे वाले कारकों पर अध्ययन;
- नीकोबार में स्कूल जाने से पूर्व आयु के बच्चों की पोषणज स्थिति;
- क्षयरोग– डॉट प्लस के अंतर्गत कल्चर, औषध सुग्राह्यता परीक्षण सेवाएं

3. क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र, भुवनेश्वर

- जनजातीय नवयुवतियों में अरक्तता के नियंत्रण के लिए बेहतर विधान का प्रयोग;

- स्कूल जाने से पूर्व आयु के बच्चों में अल्पपोषण के विरुद्ध विटमिन ए, विटमिन ई अल्पता की गंभीरता का अध्ययन;
- उड़ीसा के जनजातीय जिलों में गम्भीर अतिसार की हेतुकी का अध्ययन।

4. राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद

- राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्युरो (नेशनल न्युट्रीशन मॉनीटरिंग ब्युरो) द्वारा जनजातीय आबादी के आहार एवं उनके पोषण की स्थिति का अध्ययन।

5. राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

- भारत में सगर्भता के दौरान मलेरिया के निवारण एवं इलाज हेतु प्रभावी एवं सुरक्षित इंटरवेंशन कार्य।

6. रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केंद्र, पुडुचेरी

- उड़ीसा के कोरापुट जिले में दसमंतपुर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पी एच सी) में ए सी टी की चिकित्सीय प्रभावकारिता का अध्ययन;
- घरों के भीतर मलेरिया रोगवाहकों की सघनता का सर्वेक्षण;
- डीडीटी, मैलाथियॉन और डेल्टामेथ्रिन के प्रति *एनॉफिलीज़ क्युलिसीफेसीज़* और *एनॉ. फ्लूवियाटिलिस* मच्छरों की अनुक्रिया।

7. क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र, जोधपुर

- जनजातीय आबादी के पोषण एवं स्वास्थ्य की स्थिति पर अध्ययन;
- *पी. वाइवैक्स* परजीवी से उत्पन्न मलेरिया के रोगियों और कंट्रोल आबादी के डफी रक्त वर्ग जीनों में पॉलीमॉर्फिज़्म्स का अध्ययन ।

8. राजेंद्र स्मारक आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान, पटना

- जनजातीय आबादी में असामान्य हीमोग्लोबिन का अध्ययन;
- बिहार/झारखण्ड की जनजातीय आबादियों में अतिरक्तदाब और संबद्ध खतरे वाले कारकों की व्यापकता का अध्ययन;
- जनजातीय आबादी द्वारा संक्रामक रोगों के इलाज हेतु प्रयुक्त पारम्परिक औषधियों की खोज एवं प्रायोगिक वैधता का निर्धारण;
- रोगवाहक जन्य एवं जलजन्य रोगों की गम्भीरता के साथ पोषणज स्थिति की संबद्धता का अध्ययन ।

9. राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान, मुम्बई

- नवजात की जांच और सिकिल सेल विकार के प्राकृतिक इतिहास का अध्ययन;
- थैलासीमिया और सिकिल सेल विकारों का प्रसवपूर्व निदान।

10. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली

- *असंचारी रोग प्रभागः* जनजातीय शोध गतिविधियों में अतिरक्तदाब, मधुमेह, कैंसर, मानसिक स्वास्थ्य, चिरकारी रोग और सम्बद्ध स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान।
- *जानपदिक एवं संचारी रोग प्रभागः* जनजातीय उपयोजना के अंतर्गत जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए विभिन्न परियोजनाएं स्वीकृत।

ट्रांसलेशनल अनुसंधान

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के अंतर्गत जारी शोध कार्यों के परिणामस्वरूप प्राप्त महत्वपूर्ण लीड्स को जन सामान्य तक पहुंचाने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। अभी इसकी शुरुआत आई सी एम आर के इंट्राम्युरल कार्यक्रम के रूप में की गई है। आई सी एम आर के 27 संस्थानों में ट्रांसलेशनल रिसर्च सेल की शुरुआत की गई है, जिसका समन्वयक सेल आई सी एम आर मुख्यालय में स्थित है। महत्वपूर्ण शोध परिणामों से प्राप्त लीड्स से लगभग 100 महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों की पहचान की गई। इनमें प्रथम और द्वितीय चरण में सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर स्वास्थ्य सुरक्षा प्रणाली में सम्मिलित करने हेतु क्रमशः 52 और 23 प्रौद्योगिकियों/कार्यक्रमों का चयन किया गया। इन 75 लीड्स/कार्यक्रमों के अलावा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तीन विशेष कार्यक्रमों (मधुमेह के लिए नैदानिकी, एच1 एन1 के लिए रिएजेंट्स और स्वदेशी एच1 एन1 वैक्सीनों के उत्पादन को सरलीकृत करना) और रोगवाहक नियंत्रण एवं डेंगी, चिकनगुनया, लंगफ्लूक, क्षयरोग आदि सहित विभिन्न संक्रामक रोगों के लिए नैदानिक विधियों के लिए नवीन साधनों का विकास मुख्य पहल है।

आई सी एम आर द्वारा संपन्न शोध से मिले परिणामों को उत्पादों में बदलने एवं बाजार तक पहुंचाने के लिए उद्योगों को हस्तांतरित किया जाना है जिससे देश की आम जनता सीधे लाभांवित हो सके। कुल 30 प्रौद्योगिकियां विकास की उन्नत अवस्था में हैं, जिनके परीक्षण और मूल्यांकन का कार्य वर्ष 2013–2014 में पूर्ण हो जाएगा। इनमें मधुमेह, कैंसर, क्षयरोग, कुष्ठरोग, क्लैमाइडिया का निदान, रोग नियंत्रण विधियां, आदि प्रमुख हैं।

इस प्रकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ रिसर्च) अपने रोग विशिष्ट संस्थानों के माध्यम से देश की विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से संबंधित नैदानिक और चिकित्सीय सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में अनुसंधानरत होने के साथ–साथ शोध परिणामों और उनसे निर्मित प्रौद्योगिकियों/उत्पादों को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए कृत संकल्प है।

सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, रामलिंगस्वामी भवन, अंसारी नगर, नई दिल्ली 110 029

पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110 001 की वेबसाइट (pib.nic.in) पर दिनांक 7 अगस्त, 2013 को उपलब्ध 'हिन्दी फीचर' से साभार

आई सी एम आर मुख्यालय के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

ध्वजारोहण करते हुए स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच

स्वतंत्रता दिवस की 67वीं वर्षगांठ के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय के प्रांगण में एक समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्रातः 9.00 बजे स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने राष्ट्रीय ध्वज का ध्वजारोहण करते हुए उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ राष्ट्रगान किया। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित आई सी एम आर के सभी सदस्यों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनायें दीं। डॉ कटोच ने अपने सम्बोधन में स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग/आई सी एम आर के सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का आह्वान किया कि सभी राष्ट्र की प्रगति में अपने–अपने लक्ष्यों का निर्धारण करके समयबद्ध तरीके से कर्तव्य निष्ठा एवं कड़ी मेहनत के साथ कार्य करें। हमारे संसाधन सीमित हैं, परंतु यदि राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता और सच्ची लगन के साथ अपने कर्तव्यों का अनुपालन किया जाये तो निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति संभव है। उन्होंने बताया कि हमें 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए निर्धारित लक्ष्यों और स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा गठित उच्च अधिकार प्राप्त समिति के समक्ष प्रस्तुत लक्ष्यों को समय सीमा के अंतर्गत प्राप्त करने की दिशा में पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। आई सी एम आर के वैज्ञानिकों द्वारा संपन्न शोध कार्यों से मिले परिणाम सीधे आम आदमी तक पहुंचने चाहिए, इसके लिए हमारे वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों को आम आदमी तक पहुंचाने के लिए उन्हें आवश्यक परीक्षणों के उपरांत उद्योग को हस्तांतरित करना समय की मांग है। हमें सामाजिक–व्यावहारिक अनुसंधान और स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है जिससे देश की सामान्य आबादी की स्वास्थ्य आवश्यकताओं की पहचान की जा सके और जिसके आधार पर उन्हें स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के कार्यक्रमों में आवश्यक सुझाव दिए जा सकेंगे। सचिव महोदय ने बताया कि आई सी एम आर के 16 संस्थान अपने शोधकार्य जनजातीय लोगों की स्वास्थ्य समस्याओं और आवश्यकताओं पर केंद्रित करते हुए प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। हर्ष का विषय है कि जिन संस्थानों के क्षेत्र में जनजातीय आबादी की स्वास्थ्य समस्याओं पर शोध पर केंद्रित नहीं हैं, वे भी पता लगाने में जुट गए हैं कि उनके क्षेत्र में कोई जनजातीय आबादी की उपस्थिति तो नहीं है, जिससे उनकी समस्याओं पर कार्य किए जा सकें।

अंत में, सचिव महोदय ने आशा व्यक्त की कि आई सी एम आर के सभी सदस्य जनसाधारण की स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने की दिशा में अपना पूर्ण योगदान देंगे। यही राष्ट्र के प्रति हमारा सच्चा प्रेम होगा। इस अवसर पर आई सी एम आर के वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री टी. एस. जवाहर, वरिष्ठ वित्तीय सलाहकार श्रीमती धरित्री पण्डा, आई सी एम आर मुख्यालय परिसर में स्थित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के निदेशक डॉ अरविंद पाण्डेय, वैज्ञानिक 'जी' डॉ के. के. सिंह, डॉ रश्मि अरोड़ा के साथ बड़ी संख्या में वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण और कर्मचारीगण की उपस्थिति रही।

ध्वजारोहण के उपरांत आई सी एम आर के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच

स्मृति शेष : डॉ शरद विश्वनाथ आप्टे (1930-2013)

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ शरद विश्वनाथ आप्टे का एक अल्प बीमारी के उपरांत दिनांक 2 फरवरी, 2013 को पुणे में निधन हो गया । दिनांक 7 जुलाई, 1930 को पुणे में जन्मे डॉ आप्टे ने वर्ष 1955 में बी.जे. मेडिकल कॉलेज, पुणे विश्वविद्यालय से MBBS और वर्ष 1963 में उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से जीवरसायन में MD की उपाधियां प्राप्त कीं। उन्होंने वर्ष 1969 में डॉ सी.गोपालन के मार्गदर्शन में पूना विश्वविद्यालय से Ph D की उपाधि प्राप्त की और उनकी थीसिस का शीर्षक 'लौह चयापचय पर अध्ययन' था ।

एक शोधकर्ता के रूप में वे हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान से जुड़े और कालान्तर में नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर मुख्यालय में वरिष्ठ उपमहानिदेशक और मौलिक आयुर्विज्ञान प्रभाग के प्रमुख के रूप में शीर्ष पद पर पहुंचे । राष्ट्रीय पोषण संस्थान में कार्य करने के दौरान वर्ष 1965-67 के दौरान वे रॉकफेलर फाउण्डेशन फेलोशिप से सम्मानित किए गए । उन्होंने मुख्यतया लौह संतुलन पर अपने शोध कार्य को *लैंसेट, ब्रिटिश जर्नल ऑफ न्युट्रीशन, अमेरिकन जर्नल ऑफ क्लीनिकल न्युट्रीशन, ब्रिटिश जर्नल ऑफ हीमैटोलॉजी, इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च,* आदि जैसे अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय जर्नलों में प्रकाशित किए हैं ।

आई सी एम आर में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने *नेशनल टैलेंट सर्च प्रोग्राम* (राष्ट्रीय प्रतिभा खोज कार्यक्रम), जो आई सी एम आर के तत्कालीन महानिदेशक डॉ सी.गोपालन का महत्वपूर्ण कार्यक्रम था, को परामर्श सेवाएं प्रदान कीं । इस कार्यक्रम की सहायता से अनेक प्रतिभाशाली मेडिकल छात्र राष्ट्रीय स्तर पर आयुर्विज्ञान अनुसंधान कार्य से जुड़े । उनमें से अधिकांश भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद से जुड़े और वे आई सी एम आर के शीर्ष पदों पर आसीन हुए हैं । इस सूची में सम्मिलित कुछ विशिष्ट प्रतिभाएं हैं - डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर; डॉ कंजक्षा घोष, निदेशक, राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान, मुम्बई; डॉ एस.के. कार, निदेशक, क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, भुवनेश्वर । उन्होंने दो और कार्यक्रम विकसित किए यथा - मेडिकल कॉलेजों में मध्य स्तरीय फैकल्टी सदस्यों के लिए शोध कैरियर विकास फण्ड और लघुकालिक अनुसंधान स्टुडेंटशिप । डॉ आप्टे एक परिपूर्ण मेडिकल प्रशासक थे ।

डॉ शरद विश्वनाथ आप्टे

डॉ आप्टे डॉ एच.एम.भाटिया के साथ प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान (अब राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान, NIIH) के लिए मुम्बई स्थित के.ई.एम. अस्पताल के नवीन भवन में 13वीं मंजिल को प्राप्त करने में प्रेरक रहे । वर्ष 1988 में डॉ एच.एम. भाटिया के अवकाश ग्रहण करने के पश्चात वे निदेशक के पदभार के साथ प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान में सम्मिलित हुए। डॉ आप्टे इस संस्थान की सभी प्रयोगशालाओं को सुसज्जित करने और उनको आधुनिक बनाने में साधक रहे । उन्होंने शोध कार्य के लिए आवश्यक अनेक नवीनतम उपकरणों की व्यवस्था की जिससे वैज्ञानिकों को प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान के विभिन्न आयामों में उन्नत शोध कार्य की शुरुआत करने में मदद मिली। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि इस संस्थान को वैज्ञानिकों के लिए आवास की आवश्यकता है और संस्थान के निकट चार फ्लैट्स की व्यवस्था की ।

ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें ।

अजीत गोरक्षकर
राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान
मुम्बई - 400 012
ajit5678@yahoo.com

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

ऑन लाइन एक्स्ट्राम्युरल प्री-प्रोपोज़ल पर जांच समिति की बैठक	17 जुलाई, 2013
स्टेम कोशिका अनुसंधान और चिकित्सा हेतु राष्ट्रीय शीर्ष समिति की 7वीं बैठक	17 जुलाई, 2013
भोपाल स्मारक अस्पताल एवं अनुसंधान केन्द्र (BMHRC) की लघु इकाइयों की समीक्षा हेतु इंफ्रास्ट्रक्चर संबंधी विशेषज्ञ समिति की बैठक	18 जुलाई, 2013
एंटीमाइक्रोबियल रेज़िस्टैंस सर्वीलैंस नेटवर्क (AMRSN) की बैठक	22 जुलाई, 2013
विकलांग हेतु हेड माउंटेड वायरलेस माउस एवं की बोर्ड की जन स्वास्थ्य प्रासंगिकता की जांच हेतु बैठक	22 जुलाई, 2013
"अशक्तता पर अनुसंधान" नामक राष्ट्रीय टास्क फोर्स परियोजना पर विशेषज्ञ समिति की बैठक	23 जुलाई, 2013
भेषजगुणविज्ञान पर विशेषज्ञ दल की बैठक	23-24 जुलाई, 2013

एक इंट्रावेसल इंजेक्टेबल पुरुष गर्भ निरोध (RISUG) के साथ द्वितीय प्रावस्था के चिकित्सीय परीक्षण पर अन्वेषकों की बैठक	25 जुलाई, 2013
नैनोमेडिसिन पर फेलोशिप हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	29 जुलाई, 2013
हेल्थ एकाउंट स्कीम ऑपरेशनल मूल्यांकन पर बैठक	30 जुलाई, 2013
राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान की प्रौद्योगिकियों पर चर्चा हेतु बैठक	31 जुलाई, 2013
पर्यावरण पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	5 अगस्त, 2013
रिस्क इंस्योरेंस योजना पर बैठक	5 अगस्त, 2013
मुखीय कैंसर की जांच हेतु प्रारंभिक नैदानिक परीक्षण पर विशेषज्ञ दल की बैठक	8 अगस्त, 2013
नैनो मेडिसिन पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	12 अगस्त, 2013
नॉन अल्कोहलिक वसीय यकृत रोग के क्षेत्र में टास्क फोर्स दल की बैठक	13 अगस्त, 2013
मानव स्वास्थ्य पर नॉन-आयोनाइज़िंग वैद्युत चुम्बकीय क्षेत्र के प्रभाव पर आई सी एम आर टास्क फोर्स अध्ययन की विशेषज्ञ एवं निगरानी समिति की बैठक	13 अगस्त, 2013
सगर्भता सहित महिलाओं में साप्ताहिक के विरुद्ध दैनिक लौह सम्पूरण पर ऑक्सीकर दबाव के आमापन पर एक टास्क फोर्स अध्ययन की बैठक	20 अगस्त, 2013
मेडिकल प्रौद्योगिकी मूल्यांकन बोर्ड (एम टी ए बी) आई सी एम आर/डी एच आर कार्यक्रम के सलाहकार दल की बैठक	20 अगस्त, 2013
शिशु स्वास्थ्य पर परियोजना पुनरीक्षण दल की बैठक	21 अगस्त, 2013
जीवरसायन/प्रत्यूर्जता और प्रतिरक्षाविज्ञान पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	21 अगस्त, 2013
लक्ष्य उत्पाद प्रोफाइल हेतु परामर्शक बैठक	21 अगस्त, 2013
आई एन डी समिति की बैठकें	21 अगस्त, 2013

आई सी एम आर की वित्तीय सहायता से संपन्न संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
कॉस्मेस्युटिकल्स और न्युट्रास्युटिकल्स में नवीन वितरण प्रयास तथा नियामक प्रभावों पर सेमिनार	22-24 अगस्त, 2013 मनीपाल	**डॉ एन. उडुपा** प्राचार्य, मनीपाल कॉलेज ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज़ मनीपाल विवविद्यालय, मनीपाल
टी एम जे सम्मेलन एवं मास्टर्स पाठ्यक्रम-2013	22-24 अगस्त, 2013 लखनऊ	**प्रो दिव्या मेहरोत्रा** आयोजन सचिव मुखीय एवं मैक्ज़िलो-फेसियल शल्यक्रिया विभाग छत्रपति साहूजी महाराज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ
इंटरफेसिंग मौलिक एवं ट्रांसलेशनल अनुसंधान पर संगोष्ठी	23 अगस्त, 2013 नई दिल्ली	**श्री आनन्द सिंह** आयोजन सचिव, जीवरसायन विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली
भारत में विभिन्न भौगोलिक स्थानों में प्रतिरक्षाविज्ञान पर सी एम ई पाठ्यक्रम	23-24 अगस्त, 2013 हैदराबाद	**प्रो डी.एन. राव** जीवरसायन विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली
शोध विधिविज्ञान और वैज्ञानिक लेखन पर कार्यशाला	24-25 अगस्त, 2013 भुवनेश्वर	**डॉ अंशुमन पाणिग्रही** सह आचार्य, सामुदायिक चिकित्साविज्ञान विभाग कलिंग आयुर्विज्ञान संस्थान एवं पी.बी. स्मारक अस्पताल, भुवनेश्वर

संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
CI/CT परिवेश में आपातकालीन और क्रिटिकल सुरक्षा पर सम्मेलन	24-25 अगस्त, 2013 श्रीनगर	**कर्नल सुब्रतो सेन** वरिष्ठ सलाहकार एवं अध्यक्ष संज्ञाहरणविज्ञान एवं क्रिटिकल सुरक्षा विभाग 92 बेस अस्पताल, श्रीनगर
फार्मेकोजीनोमिक्स में बायोइंफार्मेटिक्स, आण्विक जैविकी में मूल तकनीकों पर राष्ट्रीय कार्यशाला	26-31 अगस्त, 2013 पुडुचेरी	**डॉ डी.जी. शेवाडे** आचार्य, भेषजगुणविज्ञान विभाग जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण संस्थान, पुडुचेरी
एथिक्स समिति के सदस्यों और अन्वेषकों हेतु उत्तम क्लीनिकल व्यवहारों और शोध एथिक्स पर कार्यशाला	27-28 अगस्त, 2013 मुम्बई	**डॉ रागिनी कुलकर्णी** वैज्ञानिक 'सी' राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, मुम्बई
नैनोमेडिसिन-दि कांसेप्ट्स ऐण्ड थिरैप्युटिक्स एप्लीकेशंस पर सेमिनार	27 अगस्त, 2013 बेंगलुरू	**प्रो बी. विलसन** विभागाध्यक्ष, फार्मास्युटिक्स विभाग दयानन्द सागर फार्मेसी कॉलेज, बेंगलुरू
मेडिकल थर्मल इमेजिंग का प्रयोग करते हुए मानव विकृतिविज्ञानी प्रारंभिक स्थितियों पर राष्ट्रीय सेमिनार	29-30 अगस्त, 2013 चेन्नई	**प्रो एस. मोहम्मद यासीन** विभागाध्यक्ष, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग राजलक्ष्मी इंजीनियरिंग कॉलेज, चेन्नई
बाल चिकित्सा संबद्ध मूत्ररोगविज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं संगोष्ठी	29-31 अगस्त, 2013 नई दिल्ली	**प्रो एम. बाजपेयी** विभागाध्यक्ष, पीडियाट्रिक शल्यक्रिया विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली
न्युरोफिज़िओलॉजी में ताजा प्रगति-2013 सेमिनार	30-31 अगस्त, 2013 अंगामल्ली	**डॉ जे.के. मुक्कादन** शोध निदेशक लिटिल फ्लावर अस्पताल एवं शोध केन्द्र, अंगामल्ली
औषध खोज में उभरती दिशाओं में सेमिनार	30 अगस्त, 2013 पुडुचेरी	**प्रो के. गिरिजा** विभागाध्यक्ष, फार्मास्युटिकल रसायन विभाग मदर टेरेसा स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान, पुडुचेरी
बायोमार्कर्स अनुसंधान-संभावनाओं एवं चुनौतियों में उभरती दिशाओं पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	30-31 अगस्त, 2013 हैदराबाद	**डॉ कैसर जमील** आयोजक एवं डीन, स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज़ जवाहरलाल नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़, सिकन्दराबाद
डेंगी और चिकनगुनया, भारत में जानपदिक रोगविज्ञान और उनके चिकित्सा प्रबंध पर सम्मेलन	30-31 अगस्त, 2013 नागरकोइल	**डॉ एस. सैम मनोहर दास** सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, जन्तुविज्ञान विभाग स्कॉट क्रिश्चियन कॉलेज, नागरकोइल
पीडियाट्रिक शिक्षण-समस्याओं और हलों पर प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन	31 अगस्त-1 सितम्बर, 2013 मैंगलोर	**डॉ सन्तराम वालिगा** आयोजन सचिव, पीडियाट्रिक्स विभाग कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, मैंगलोर

तकनीकी सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87